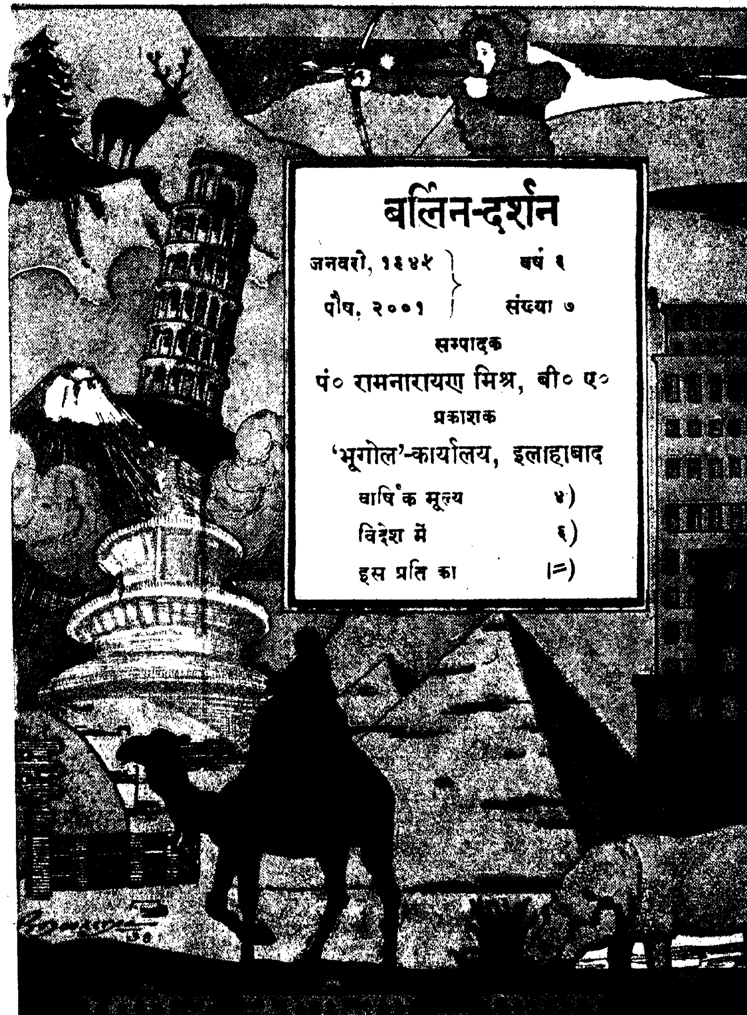
देश दर्शन

पूर्ण संख्या—६३



बर्लिन-दर्शन

जनवरी, १९४५ } वर्ष १

पौष, २००१ } संख्या ७

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

'भूगोल'-कार्यालय, इलाहाबाद

वार्षिक मूल्य ५)

विदेश में ६)

इस प्रति का ।=)

विषय-सूची

बर्लिन-दर्शन

स्थित सीमा, तथा विस्तार

बर्लिन ने संसार में बहुत तेज़ी के साथ उन्नति की है। दूसरा ऐसा कोई शहर नहीं हैं जो उसकी इस बात में बराबरी कर सके। लगभग ५० या ५५ वर्ष पूर्व वह एक मामूली सा शहर था और वहां कोई भी विशेष बात नहीं थी। लेकिन वहां इतनी तेज़ी के साथ परिवर्तन हुए हैं कि कोई भी व्यक्ति जो वहां दस साल पहले गया हो, अब उसे पहचान भी न पायेगा।

शहर बहुत बड़ा और घना-आबाद हो गया है। सड़कों पर भीड़ सी लगी मालूम होती है। गाड़ियों का आना जाना हर समय लगा रहता है। वहां के चौरस्तों पर खड़े हुये पुलिस भी अब पहले की अपेक्षा चुस्त और होशियार होते हैं। साथ ही अब तो बड़े बड़े चौरस्तों पर खम्भे पर बिजली के बल्ब लगे रहते हैं जब लाल रोशनी होती है तो तमाम गाड़ियाँ रुक जाती हैं और पैदल चलने वाले एक तरफ से दूसरी तरफ बिना किसी डर के आ-जा सकते हैं। इसके बाद पीली रोशनी होती है और तमाम मोटरें, बसें और अन्य गाड़ियाँ चलने को तैयार हो जाती हैं शीघ्र ही हरी रोशनी होती है और वे सब की सब चल पड़ती हैं। ऐसी दशा में यदि कोई आदमी उनके बीच में पड़ जाय तो उसका पता भी न चले।

यदि तुम कभी बर्लिन जाओ तो तुम्हें वहां के सड़कों पर एक विशेष बात दिखाई पड़ेगी। जिस प्रकार हिन्दुस्तान में हम लोग सड़क के बाएँ किनारे पर चलते हैं या अपनी साइकिल या मोटर चलाते हैं, बर्लिन के लोग सड़क के दाहिने किनारे

पर चलते हैं। लेकिन वहां गाड़ियों का किराया (भाड़ा) बहुत कम है। केवल दो पैसे खर्च कर के कोई भी मनुष्य दस मील तक एक ट्राम या बस में सफर कर सकता है। वहां अधिकतर यही ट्राम बसें या मोटरें चलती हैं। सड़कों के नीचे भी सुरंगें खुदी होती हैं जिनमें रेलें चलती हैं। चूँकि बर्लिन में जाड़े के दिनों में भयङ्कर ठंड पड़ती है, "सीट" के नीचे थोड़ा सा कोयला सुलगता रहता है जिससे डिब्बे या मोटर में कुछ गर्मी रहे।

बर्लिन में किराये पर मोटरें बहुत सस्ती मिल जाती है इस लिए सभी लोग उसका प्रयोग कर सकते हैं। वहाँ घोड़ा-गाड़ियां नहीं के बराबर ही हैं। जर्मनी के अन्य भागों की भांति बर्लिन में भी अक्सर कुत्ते छोटी छोटी गाड़ियां खींचते हैं। ये कुत्ते बड़े स्वामिभक्त होते हैं। कुछ वर्ष पहले लोगों ने बर्लिन में गदहों द्वारा गाड़ी खींचने का प्रयत्न किया गया था। लेकिन वे असफल रहे। कहीं कहीं पर खच्चर अवश्य काम करते हुये देखे जाते हैं।

यहाँ जमीन के नीचे चलने वाली रेलों का जाल सा बिछा है। ये रेलें बिजली द्वारा चलाई जाती हैं। भूमि के नीचे बने हुए स्टेशन बड़े साफ-सुथरे और सुन्दर होते हैं। यहाँ रोशनी का भी अच्छा प्रबन्ध रहता है। दीवालें भी रंगी हुई रहती हैं। इन स्टेशनों से सड़क पर आने के लिए सीढ़ियां लगी होती हैं। इन रेलों में बैठने की गद्दियाँ लाल और पीले रंग की होती हैं। लाल गद्दियां सिगरेट आदि पीने वालों के लिए होती है

और पीली गद्दियों पर वे लोग बैठते हैं जो सिगरेट या सिगार आदि कुछ भी नहीं पीते हैं।

यहां की सड़कों पर चलने वाली ट्राम गाड़ियों का रंग पीला होता है। किराये पर चलने वाली मोटरें गहरे हरे रंग में रंगी होती हैं उन पर सफेद और हरी धारियां पड़ी रहती हैं। ये गाड़ियाँ अक्सर बहुत नीची होती हैं लेकिन बैठने में ये बड़ी सुखप्रद होती हैं डाकखाने की सभी गाड़ियां और साइकिलें पीले रंग की होती हैं, लेकिन सड़कों पर लगे डिब्बे। (बम्बे) जिनमें पत्र डालते हैं, नीले रंग के होते हैं। पुलिस स्टेशनों पर हरे लैम्प की रोशनी होती है और लाल रोशनी आग होने का द्योतक है।

बर्लिन के लोगों को अपने यहां के 'फायर ब्रिगेड' पर बहुत विश्वास है और सचमुच हर स्थान पर 'फायर ब्रिगेड' का बड़ा अच्छा प्रबन्ध है। लोगों का विश्वास तो यहां तक पहुँच चुका है कि अगर एक फ्लैट (मंजिल या कोठा) पर आग लगी हो तो उसके ऊपर या नीचे वाले फ्लैट के लोग घबड़ा कर भागते नहीं, किन्तु खिड़कियों से झांकते हुए बड़े धीरज के साथ आग बुझाने वाले इञ्जनों की प्रतीक्षा करते रहते हैं।

ये 'फायर ब्रिगेड' केवल आग बुझाने का ही काम नहीं करते, बल्कि ये और भी बहुत से कामों में सहायक होते हैं। लोगों को इनसे इतनी अधिक सहायता मिलती है कि वे इसे 'प्रत्येक काम की दासी' कहने लगे हैं। यदि कोई आदमी ट्राम गाड़ी से दब जाता है तो शीघ्र ही निकाला नहीं जा सकता, तो बिना किसी प्रकार की देरी के वहाँ एंजिन क्रेन

आदि के साथ पहुँच जाते हैं और जल्दी से उस भारी गाड़ी के ऊपर उठा कर उस व्यक्ति की जान बचाते हैं। इसी प्रकार यदि कोई घोड़ा गाड़ी नदी या नहर में गिर जाती है तो ये इञ्जन तुरन्त पहुँच कर उसे पानी से बाहर निकालते हैं। केवल इतना ही नहीं यदि किसी स्थान पर वर्षा अधिक होने से पानी भर जाता है और वहां के घर आदि उसमें डूब जाते हैं तो यही इञ्जन वहां पहुँच कर शीघ्र ही सारा पानी पम्प के द्वारा बाहर निकाल फेंकते हैं।

कभी कभी सड़कों पर जनाज़े जाते हुए भी मिलते हैं। मुर्दा ले जाने वाली गाड़ी नेक बहुत बड़े डिब्बे की तरह बनी होती है और काले कपड़े से बिल्कुल ढकी रहती है, यहां तक कि पहिए भी दिखाई नहीं पड़ते। इन गाड़ियों में दो से ले कर छः घोड़े तक जोते जाते हैं। ये घोड़े भी काले कपड़े से ढके होते हैं। इस गाड़ी के पीछे कुछ और गाड़ियां होती हैं जिन पर उस व्यक्ति के सम्बन्धी आदि रोते-चिल्लाते हुए जाते हैं समय के अनुसार. धीरे धीरे यह रोना चिल्लाना अब कम होता जा रहा है।

बर्लिन में रात दिन बराबर चहल-पहल बनी रहती है। ऐसा मालूम होता है कि यहां के लोग कभी सोते ही नहीं। होटल और रेस्ट्रां आदि रात भर खुले रहते हैं। अधिकतर नाच-गाने और दूसरे जलसे आधी रात के बाद प्रारम्भ होते हैं। लेकिन बर्लिन के लोग कितनी ही देर में क्यों न सोएँ, वे नित्य की ही भाँति प्रातःकाल शीघ्र ही उठ जाते है क्योंकि दुकानें और

बर्लिन-दर्शन

बहुत से दफ्तर आठ बजे से खुलते हैं और काफी दूर चल कर लोगों को अपने अपने काम पर पहुँचना पड़ता है। हां, रविवार को अवश्य ये लोग आराम करते हैं।

यहां की सड़कों पर अक्सर शराबी पड़ा हुआ दिखाई पड़ता है। लेकिन वहां कि औरतें इतनी शराब कभी नहीं पीतीं। यहां की शराब भी बहुत हल्की होती है। यदि कोई तेज़ शराब बनाए तो उसे राज्य की ओर से कठिन दण्ड मिलता है। आज कल तो बर्लिन के होटलों में कभी कभी लोग दूध, लेमन या दूसरे द्रव्य पदार्थ जिसमें नशा नहीं होता है उसे पीते हुए दिखाई पड़ते हैं।

यहां की सड़कों के किनारे बहुत सी छोटी छोटी दुकानें बनी हुई हैं जिनमें अखबार या सोडा और लेमन आदि बिकता है। चौरस्तों पर तथा सड़कों की मोड़ पर फूल बेचने वाले डोलचियों में फूल भरे खड़े रहते हैं। इससे इन चौरस्तों की शोभा बहुत बढ़ जाती है। ये फूल बेचने वाले अपनी डोलचियों में एक बड़ा छाता भी बांधे रहते हैं। बर्लिन निवासियों को फूलों से विशेष प्रेम है, इसलिए इन फूल बेचने वालों की खूब बिक्री होती है और इनके व्यापार की दशा बहुत अच्छी है।

बर्लिन के लोग और उनके घर-बार

बर्लिन के लोग बहुत अच्छे स्वभाव के होते हैं और विदेशी लोगों के प्रति बड़े उदार होते हैं। ये लोग बड़े खुश-दिल भी होते हैं।

बर्लिन में काम करने के लिये लोग करीब के स्थानों से

आते हैं, लेकिन अधिकतर लोग बर्लिन में ही रहते हैं। इसी कारण से यहां प्रत्येक श्रेणियों का अजीब जमघट दिखाई पड़ता है। बड़े-बड़े ऊँचे मकानों में जिनमें बहुत से फ़्लैट होते हैं वे बहुत बड़े और महंगे होते हैं नीचे के हिस्से में बनिये या मोची की दुकान भी दिखाई पड़ती है। इन छोटे छोटे दुकानदारों या अन्य छोटे छोटे कारबार करने वालों का काम, उन्हीं के ऊपर के फ्लैटों में रहने वालों के कारण चलता है।

यहां के मकान बहुत ऊँचे होते हैं। वे अधिकतर चार या पांच मंज़िल वाले होते हैं। सब से ऊपर की मंज़िल के फ्लैट लोग अधिक पसन्द करते हैं क्योंकि यहां शान्ति रहती है और हवा भी स्वच्छ और ताज़ी होती है। ये मकान देखने में महल के समान प्रतीत होते हैं और इनके सामने का दरवाज़ा बहुत बड़ा और भारी होता है। यह दरवाज़ा रात को ८ बजे बन्द हो जाता है। वहीं पर एक पहरेदार एक छोटी सी कोठरी में रहता है जिसके पास उसकी कुन्जी रहती है। सामने के हाल का फ़र्श संगमरमर का होता है। सीढ़ियाँ भी अक्सर संगमरमर की होती हैं। इन मकानों की सजावट भी बहुत अच्छी होती है। रास्ते में भी दरी बिछी होती हैं दीवालों पर बड़े बड़े शीशे टंगे होते हैं और कभी कभी इन मकानों की सजावट बहुत कीमती हो जाती है।

इन मकानों के फ्लैट बहुत आराम प्रद होते हैं। नये बने हुए मकानों में बिजली द्वारा गर्मी रक्खी जाती है और नहाने तथा हाँथ-धोने या अन्य कामों के लिए पानी भी गर्म

मिलता है। पुराने मकानों में चीनी मिट्टी द्वारा बने हुये लम्बे लम्बे स्टोवों द्वारा गर्मी रक्खी जाती है। ये चिमनियाँ भद्दी नहीं होतीं और इनकी गर्मी कमरे के प्रत्येक भाग में पहुँचती है।

प्रत्येक फ्लैट में बावर्चीखाना, भोजन करने का कमरा, पढ़ने का कमरा, सोने का कमरा, नौकर का कमरा आदि होते हैं। इन लोगों के यहां खाना बनाने की जगह बहुत साफ़-सुथरी और सुन्दर होती है। वहाँ सभी वस्तुएँ भली भांति सजा कर रक्खी जाती हैं।

बिजली की रोशनी और गैस प्रत्येक स्थान पर होते हैं और करीब करीब सारा खाना गैस द्वारा ही बनाया जाता है। प्रत्येक फ्लैट में कपड़ा धोने का भी एक कमरा होता है और जो लोग अपने कपड़े घर ही पर धो लेना चाहते हैं उनको उसके लिए पूरा सुभीता रहता है।

यहाँ के नौकर बड़े मेहनती और इमानदार होते हैं। प्रत्येक बड़े फ्लैट में कम से कम एक मनुष्य नौकर होता है जो कि घर तथा बाहर का सारा काम करता है। वह बर्तन भी साफ करता है। कपड़ों पर ब्रुश करता है, जूतों पर पालिश करता है, खाना खिलाने या चाय पिलाने में सहायता करता है, बच्चों को स्कूल से घर ले आता है। और बाजार से सारा सामान भी वही खरीद कर लाता है।

बर्लिन में जाड़े में बड़ी कठोर ठंड पड़ती है। रूस के मैदानों से होकर आने वाली ठंडी ठंडी हवाओं को रोकने के लिए बीच में कोई भी पहाड़ नहीं है, इसलिए ये हवाएँ सीधी जर्मनी तक चली आती हैं। इसी कारण से यहाँ के मकानों

की खिड़कियों में दो किवाड़ होते हैं जो कि ठन्डी हवा को रोकने के साथ साथ बाहर के शोर गुल को भी अन्दर आने से रोकते हैं।

बहुत बड़े बड़े धनवान व्यक्ति पूरे मकान में रहते हैं। वे मकान अधिकतर सड़कों के किनारे बने हुए होते हैं और देखने में महल के समान मालूम होते हैं।

यहां के मकानों के सामने बगीचे बहुत कम होते हैं। इसलिए बड़े बड़े मकानों की छतों पर बगीचे लगाये जाते हैं। इन बगीचों में उसी मकान के सभी किरायेदार जा सकते हैं लेकिन इसके लिए उन्हें कुछ किराया और देना पड़ता है। दिन प्रति दिन इस प्रकार के बगीचों को बनाने का रिवाज बढ़ता जा रहा है और नए बनने वाले सभी मकानों की छतों पर बगीचे होते हैं।

बर्लिन में कुछ छोटे छोटे मकानों की कतारें बनाने का भी प्रयत्न किया गया है। ये मकान एक पूरे परिवार के रहने के लिये बनाये जाते हैं। लेकिन ऐसे मकान वहाँ बहुत कम हैं और वे बन कर तैयार भी नहीं हो पाते कि लोग उन्हें किराये पर ले लेते हैं।

बर्लिन के लोग खाने-पीने के बड़े शौकीन होते हैं इससे वे अधिकतर शाम को खाना किसी होटल में ही खाते हैं। गर्मी के दिनों में खुली हवा वाले नाश्ताघर आदमियों से भरे रहते हैं। यहां के होटल बहुत आरामप्रद होते हैं। ये बर्लिन वालों के लिए क्लबोंका काम देती है। यहां संसार के हर प्रसिद्ध अखबार सदैव रहा करते हैं।

बर्लिन-दर्शन

बर्लिन में औरतों के लिए भी बहुत से क्लब हैं। इनमें सब से पुराना और लिसयम जो दुनिया के हर लिसयम क्लबों से मिला हुआ है। यह एक बहुत बड़े इमारत में है। यहाँ भाषण और संगीत तथा हर प्रकार के मनोरंजन होते हैं।

मकानों में पालतू जानवर रखना मुश्किल है फिर भी कुत्ते बहुत दिखाई देते हैं। प्रत्येक कुत्ते के लिए ६० शिलिंग सालाना कर देना पड़ता है। अच्छे किस्म की बिल्लियां बहुत कम दिखाई देती हैं।

बर्लिन के लोग बहुत तेज बातचीत करते हैं। वे फुस फुसाना पसंद नहीं करते। वे घरेलू बातचीत भी सड़कों और बाजारों में करते नहीं हिचकते। अक्सर ट्राम पर बैठे हुए लोग दूसरों के घरों की सारी बातें जान लेते हैं।

बर्लिन निवासी हाज़िर जवाब होते हैं। यद्यपि इनके जवाब बहुत स्वस्थ नहीं होते फिर भी उपयुक्त होते हैं। जर्मनी भाषा में कई बोलियां हैं। एक बोली दूसरे बोली से प्रायः नहीं मिलती।

उत्तर डिन लिनडेन अन्टर डिन लिनडेन की सड़क जो संक्षेपतः लिनडेन के नाम से प्रसिद्ध है बहुत मनोरंजक है। इसका नाम विचिगरम से पड़ा। प्रशा की प्रथम मूर्ति का सोफी चारलोटे ने एक लिनडेन या चूने का पेड़ लगाया—बस उसी के आधार पर इस राज सड़क का नाम लिनडेन पड़ गया। इसके एक सिरे पर ब्रेनडनबर्ग का फलक है जिसमें सात दरवाजे और एक मिल केइरिया सोलेस का किला है। यहां पुराने बादशाह रहा करते थे परन्तु अब यह अजायब घर है।

यह सड़क २० मील चौड़ी है। इसमें तीन सड़कें हैं और बीच की सड़क पैदल चलने वालों के लिए है। दोनों तरफ़ चमकते हुए मकान और सर्व श्रेष्ठ होटल हैं। यहां बिजली की रोशनी इतनी रहती है कि दिन सा भाष होता है।

ब्रेनडेन वर्ग फाटक से सीधे कई मील जाने पर हैवेल नदी मिलती है रास्ते में दिरोस स्ट्रेसी के सुन्दर पेड़ों से ढकी हुई सुन्दर सड़क मिलती है।

लिनडेन के 'चूने के पेड़' यदि बोल सकते तो क्या ही अच्छा होता। इन पेड़ों ने दिग्विजयी नेपोलियन को अपने फौज के साथ शहर में घूमते देखा है। नेपोलियन यहां से 'विजय की देवी' की मूर्ति को फ्रांस उठा ले गया।

फ्रांस जर्मन युद्ध के बाद जब प्रशा का राजा जर्मनी का बादशाह हो गया और इस शहर में आया तब इसकी शाखा अवश्मेनीय रही होगी। शहज़ाद विलियम प्रथम जब अपनी फौज के साथ आया तो स्त्रियां, पुरुष, बच्चे सभी दौड़ पड़े अपने सगे सम्बन्धियों से मिलने के लिए लोगों के दिल उछले पड़ते थे।

बिलियम प्रथम के मृत्यु का दुःख भी इस शहर ने देखा। यह बादशाह प्रजा का बहुत प्यारा था। इसका सीधा सादा रहन सहन, मधुर बोल सब का मन मोह लेता था। इनका शव कई दिनों तक पड़ा रहा। जब शव सड़कों से जाने लगा तो सारी जनता उभड़ पड़ी। जलूस करीब एक मील लम्बा था। योरुप के करीब करीब सभी बादशाह आये थे।

ब्रेनडेनवर्ग फाटक के पास ही पैन्सर की सड़क है।

बर्लिन-दर्शन

यह अंग्रेज़ी और फ्रांसीसी राजदूत भवन है। विलदेम सड़क में जर्मनी के प्रधान अधिकारी लोग रहते हैं। यहीं पर चैन्सलर, वेदिय दफ्तर गृह विभाग आदि के महल हैं।

कुछ दूर आगे फ्रेडरिक सड़क है। यह योरुप की सब से लम्बी सड़क है। यहां महान फ्रेडरिक की बहुत बड़ी मूर्ती रक्खी हुई है। यह जर्मनी का बहुत भला बादशाह था। मूर्ति के पास ही पुराने शहन्शाह का महल है महल में एक ऐतिहासिक खिड़की है। यहीं से बादशाह दोपहर से शाम तक बैठे हुए लोगों को दर्शन दिया करते थे। एक बार एक बहुत बड़े आदमी इनसे मिलने आये। उन्होंने देखा कि वे उनकी ओर पीठ फेरे खिड़की से बाहर झांक रहे हैं। कुछ मिनट बाद वे फिर बड़ी कोमलता से बोले क्षमा करना मैं एक बूढ़े किसान को देख रहा था जो अपने पोते को ऊपर उठाये मेरी ओर देख रहा था। मैं बग़ैर उसे दर्शन दिये फिर नहीं सकते थे। वे महाशय पानी पानी हो गए।

इसके बाद आयराधर है। इसमें पीतल के अक्षरों में बहुत अच्छी कारीगरी हुई है। इसके सामने मुख्य "गार्ड घर" है। इसके सामने एक बहुत प्राचीन तोप रक्खी हुई है। इसे वर्बेद काहिल ग्रेचेन के नाम से पुकारते हैं।

इसके आगे विश्वविद्यालय है। इसकी इमारत कोई अच्छी नहीं है। पर यह विद्या के लिए बहुत ही प्रसिद्ध है। इसमें कई हज़ार विद्यार्थी विद्या अध्ययन करते हैं।

लिनडेन के दूसरे सिरे पर सोलेस की इमारत है इसमें ७०० कमरे हैं। इसके भीतर एक थियेटर घर भी है

जो अब बेकार पड़ा हुआ है। इसके बारे में यह प्रसिद्ध है कि इसमें एक सफेद डाइन है जो होहेनज़ोल के खान्दान के किसी भी व्यक्ति के मृत्यु के समय निकलती है और सारे कमरों में घूमती है। इसके फर्श बहुत ही चिकने हैं। इस पर टहलने वालों को जूता पहनकर चलना मना है। इस पर लोग फिसलना बहुत पसन्द करते हैं।

सोलेस के समीप ही प्रथम बादशाह की पीतल की मूर्ति है। बादशाह अपने प्रिय घोड़े पर बैठे हुए दिखाये गए हैं। सोलेस के सामने लस्टगर्टन का प्रसिद्ध चौराहा है। इसी जगह भाषण आदि होते हैं। सोलेस की एक खिड़की का बारजा जो इस चौराहे की ओर है कुछ दिनों में ऐतिहासिक स्थान हो जायगा। यहीं खड़े होकर कैसर ने लड़ाई के पहले भाषण दिया था। यहीं से लिवनेट ने खड़े होकर प्रजातन्त्र राज्य घोषित किया था।

बर्लिन के लड़के और लड़कियां

जर्मनी के लड़के या लड़कियां ६ साल की उम्र में ही पढ़ना शुरू कर देते हैं और पढ़ाई छोड़ने के समय वे प्रायः १८ साल के होते हैं। इन्हें बहुत मेहनत करनी पड़ती है। खेलने का समय प्रायः कम मिलता है। बेचारे बराबर पिसे रहते हैं। शायद तुम लोग भी इस बात को पसन्द न करोगे। जो कुछ भी हो अब जर्मनी के लोग इस बात को समझने लगे हैं कि केवल पढ़ाई से लड़के काहिल हो जाते हैं। इसी से अब उन्हें खेलने का समय अधिक दिया जाने लगा है।

बर्लिन-दर्शन

लड़कों को प्रायः ८ बजे से २ बजे तक पढ़ना पड़ता है। हर घण्टे के बाद पन्द्रह मिनट का रेसेस होता है जिसमें सब को बाहर निकल जाना पड़ता है जिससे कमरे की हवा साफ हो जाय। खाना खाने के लिये १५ मिनट की छुट्टी होती है। प्रातः-काल ८ बजे बर्लिन की सड़कों पर छोटे छोटे बच्चे अपनी काली रोटी और सैण्डविचेस ये गले से होती हुई पेटी में लटकाए स्कूल जाते दिखाई देते हैं। लड़कों को जर्मन लेटिन और फ्रेञ्च तीनों एक साथ सीखना पड़ता है। लड़कियों को लेटिन और गीत नहीं सीखना पड़ता है लड़के अपने स्कूलों में मेहनत करने को भी बहुत चाहते हैं। उन्हें स्कूल की पढ़ाई के अतिरिक्त घर के लिए भी काम इतना अधिक मिलता है कि खेलने को फुर्सत ही नहीं मिलती।

गर्मी के दिनों में बच्चे चिड़िया घरों या अजायब घरों में ले जाए जाते हैं। वहां उन्हें उनके बारे में समझाया जाता है। अथवा उन्हें जङ्गलों में ले जाकर खेल खिलाया जाता है। जाड़े के दिनों में बच्चों की हालिया कला-भवन आदि में ले जाए जाते हैं। जब कभी प्रदर्शनी वगैरह होता है तो बच्चे मुफ्त ही में वहां भेजे जाते हैं जिससे वे सब बातें सीख सकें।

स्कूली लड़कों को लम्बी छुट्टियाँ नहीं मिलती। गरमी की छुट्टी केवल पाँच हफ्ते की होती है। इस्टर और क्रिसमस की छुट्टियां पन्द्रह पन्द्रह दिन की होती हैं। बीच बीच में एक या दो दिन की भी छुट्टियां मिलती हैं जिनमें लड़के गुलछर्रे उड़ाते हैं।

चौदह साल के उम्र वाली स्कूली लड़कियों को "वैकफिश"

कहते हैं। सरकारी कागजों और सूचियों में यही नाम व्यवहृत होता है। जब ये लड़कियां १६ साल की हो जाती हैं तब इन्हें 'माई' कह कर पुकारते हैं। इसके पहले 'ड्यू' कह कर पुकारी जाती हैं। १६ साल के बाद ये लड़कियां औरत मानी जाने लगती हैं।

औरत माने जाने के दिन इनके घरों में बहुत खुशियां मनाई जाती हैं। सबसे पहले ये लड़कियां बिलकुल नए कपड़ों को पहन कर कांपती हुई गिरजा घरों को जाती हैं। वहाँ पादरी लोग इन्हें तस्दीक करते हैं। इसके बाद ये घर आती है। घर में इन्हें भेंट दी जाती है। लोग इन्हें भेंट में रुपये गहने, फूल, कपड़े आदि देते हैं। उस दिन बहुत ही चहल पहल दिखाई पड़ता है।

बर्लिन की लड़कियां बहुत पढ़ी लिखी होती हैं। वे अँग्रेजी और फ्रेन्च बहुत अच्छी तरह बोल लेती हैं। उन्हें साहित्य और हिसाब का अच्छा ज्ञान रहता है। इस विषय में सरकारी अधिकारी बहुत सख्त रहते हैं। स्कूलों में केवल वे ही मास्टर पढ़ाने पाते हैं जो मास्टरों का परीक्षा पास किए रहते हैं। यह परीक्षा बहुत कड़ी होती है।

कनफरमेशन के बाद लड़कियाँ प्रायः स्कूल छोड़ देती हैं। उसके बाद उन्हें स्विटजरलैण्ड या फ्रान्स में भेज दिया जाता है। वहाँ वे अन्य विषयों में शिक्षा ग्रहण करती हैं। कुछ आगे भी अध्ययन कर डिग्री लेती है। साधरणतया इसके बाद वे घर लौट आती हैं। यहां उन्हें खाना बनाने और गृहस्थी सँभालने की शिक्षा दी जाती है। बिना इसकी शिक्षा लिए हुए वे समाज में नहीं आने पातीं अमीर गरीब सब को सीखना पड़ता

है। इसके बाद एक 'बालनाच' का आयोजन किया जाता है। इसमें वे समाज में आती हैं।

बहुत सी लड़कियां इसके बाद शादी कर लेती हैं। क्योंकि इसके सिवा उन्हें गुजर करने का कोई रास्ता ही नहीं दिखाई देता। ये लड़कियां कटाई और बुनाई बहुत अच्छा करती हैं। मामूली लड़की के पास भी दर्जनों मेज़पोश, जाँगिया इत्यादि होते हैं।

जर्मनी में सगाई बहुत पाक निगाह से देखी जाती है। एक बार यदि सगाई तै हो गई तो फिर टूटती नहीं। और यदि टूटती भी है तो बहुत कम मामलों में। सगाई और शादी के बीच लड़के लड़कियां केवल एक साथ बाल नाच में भाग ले सकते हैं अन्यथा वे एक दूसरे से अलग रक्खे जाते हैं। जर्मनों में शादी बहुत धूम धाम से मनाई जाती है। हर रिश्तेदार कोई न कोई भेंटें अवश्य देते हैं। सरकारी नौकरी वालों को तनख्वाह कम मिलती है। इस लिए बेचारे घर नहीं बसा पाते। पर आम जनता कंजूस सी होती है। ग़रीब से गरीब लड़की का कुछ न कुछ हिस्सा होता है। इस रुपए से घर बसाया जाता है। इसके बाद पति का फर्ज है कि वह घर का खर्च चलाए। कुछ बहुत ही नए रोशनी वाली लड़कियां शादी के बाद भी खुद कमाना पसन्द करती हैं।

भाई और बहन में अगाध स्नेह होता है। बड़े भाई छोटे बहन भाइयों के साथ बहुत प्यार से खेल खेलते हैं। सड़कों पर चलते हैं तो ये उनका हाथ पकड़ लेते हैं ताकि वे दब न जांय ये अपने मां बाप को भी बहुत प्यार करते हैं। यदि कुछ दिनों

बाद इनके मां बाप से भेंट होती है तो ये बहुत प्यार दिखलाते हैं। दूसरी जगह का जरा भी ध्यान नहीं रखते। प्यार जताने में बिलकुल नहीं शरमाते। और यदि प्यार है तो उसे प्रकट करने में फिर हिचक क्यों। छोटी लड़कियां प्यार किए जाने पर बहुत मिहरबानी दिखलाती हैं। वे लड़के और लड़कियाँ जिनका लालन पालन अच्छी तरह हुआ रहता है वे हमेशा किसी भद्र महिला की योरपीय रिवाज़ के अनुकूल हाथ चूम कर अभिवादन करती हैं हमारे यहां हाथ जोड़ कर अभिवादन किया जाता है चाहे वह स्त्री हो या पुरुष। परन्तु योरप में जब महिलाओं से अभिवादन करना होता है तो श्रेष्ठ तरीका यही माना जाता है कि उनका हांथ चूम ले।

जर्मनों में जन्म दिन बहुत चहल-पहल के बीच मनाया जाता है। बच्चे जन्म दिन के पहले ही अपने पसन्द की चीज़ें लिख देते हैं। उनके रिश्तेदार लोग इन चीज़ों में एक एक चीज़ खरीद कर लाते हैं और उन्हें बधाई देते हैं। जन्म दिन को सुबह ही उठने पर जिसका जन्म दिन होता है उसके पास एक टेबुल पर बहुत बड़ा टार्टी रोटी सफेद टेबुलक्लाथ के ऊपर रक्खा रहता है।

इसके चारों ओर मोमबत्तियां जलती हैं। इसी मेज़ पर लोगों के भेंट सजाए जाते हैं। टार्टी के बीच में जिसका जन्म दिवस मनाया जा रहा है उसका नाम लिखा रहता है। जब कोई आदमी भेंट लेकर आता है तो वह सीधे मेज़ के पास जाता है और भेंट देकर टार्टी से एक टुकड़ा काट कर खाता है। यह शगुन माना जाता है। इस तरह भेंट देने वालों का

तांता दिन भर लगा रहता है। शाम को जिसका जन्म दिवस होता है उसी के मन के अनुकूल मनोरञ्जन का इन्तज़ाम किया जाता है। इस तरह खूब चहल पहल रहती है।

कुछ ही वर्षों से यह फैशन हो गया है कि जर्मन बच्चों के लिए अँग्रेजी नर्स रक्खी जायँ। काफी लोग फ्रेञ्च और स्विस नर्स भी रखते हैं। बर्लिन से ६० मील की दूरी पर स्प्रीवाल्ड नाम का एक शहर है। यहां पर नर्सें बहुत मिलती हैं। यह शहर भी दर्शनीय है जब यहां के निवासी गिर्जाघरों को जलूस बना कर चलते हैं तो बड़ा मज़ा आता है। औरतें अजीब किस्म के रंगीन कपड़े पहनती हैं। सिर पर कुछ लम्बी और दोनों तरफ को झुकी हुई एक खास किस्म की टोपी पहनती हैं।

मनोरञ्जन और खेल-कूद

बर्लिन दुनियां का सबसे मनोरञ्जक शहर है। यहाँ रहने वालों के लिए तथा यात्रियों के लिए भी मनोरञ्जन के साधन उपस्थित हैं। थियेटर बहुत से हैं। इनके अभिनय बहुत ही कलापूर्ण और गार्ट रास्ते होते हैं। यहां की ऐक्टर्सें पार्ट अदा करने के लिए अपनी खूबसूरती की परवाह नहीं करतीं। यदि उन्हें बुड्ढी औरत का पार्ट अदा करना होगा तो वे फौरन बुड्ढी बन जायँगी। यहां के लोग थियेटरों में बच्चों के लिए बहुत मुफीद समझते हैं। उनके लिए टिकट कम होता है। वहाँ वे जाकर सेक्सपियर, गेटे और शिलर आदि के मशहूर नाटक देखते हैं। इस तरह बड़े बड़े कलाकारों से उनका शहज ही परिचय हो जाता है। यहाँ सेक्सपियर के नाटक बहुत खेले

जाते हैं। लोग इसे बहुत पसन्द करते हैं। गेटे जो जर्मनों का सब से बड़ा कवि है उसके भी नाटक बहुत पसन्द किए जाते हैं। कालिदास के शकुन्तला आदि नाटक भी बड़े चाव से खेले जाते हैं और लोग पसन्द भी करते हैं।

संगीत भवन भी यहां कई हैं। एक तो लिन डेन रोड पर है। दूसरा टरगरटन में है जो क्राल के नाम से मशहूर है। जर्मन लोग इन्हें बहुत पसन्द करते हैं और ये होते भी बहुत सुहावने हैं। इनसे बढ़ कर दुनियां में और कहीं होता ही नहीं। हाल रोज़ पूरा पूरा भरा रहता है। लड़ाई के बाद (१९१४) में जब जर्मन लोग गरीब हो गए थे ये आपरा घर चलते रहे। इनमें लोकप्रियता का क्या यह कम सबूत है।

सिनेमा घर भी यहां अनेकों हैं इसमें सिगरेट पीना मना है

जर्मनी के लोग संगीत प्रेमी होते हैं घर घर में संगीत की लय गूंजा करती हैं। बड़े लोग बच्चों को उनके मन के अनुकूल ही संगीत सीखने देते हैं इससे उनके कलाकौशल का सहज ही में विकास हो जाता है। बर्लिन संगीत का केन्द्र है। यहां इसके अनेकों स्कूल हैं। इनमें जर्मनी भर से लोग पढ़ने आते हैं। बाहर से भी लोग यहाँ सीखने आते हैं। बगैर यहां आए हुए कोई विदेशी संगीतज्ञ अपने को पक्का नहीं समझता। जब कभी किसी घर में गाने का उत्सव होता है तो बहुत सुन्दर संगीत सुनने को मिलता है। ऐसा ऊँचा संगीत योरप में और कहीं नहीं मिलता।

जर्मनी के लोग नाच के भी बहुत प्रेमी होते हैं। जब कभी

नाच होगा तो मां, बाप, भाई, बहन, सभी नाचते हैं। नाचने में वे उम्र का लिहाज नहीं रखते। सुन्दर सुन्दर कपड़ों में वे कई घण्टा तक लगातार नाचते रहते हैं। कपड़े उधार देने की यहां कई कम्पिनियां खुल गई हैं। इन्हें खूब आमदनी होती है नवयुवक लोग तो रात भर नाचते रह जाते हैं।

जाड़े के दिनों में बहुत से आम वाल नाच भी होते हैं। इसके अतिरिक्त प्राइवेट नाच भी होते हैं बर्लिन में नाच से सम्बन्धित बहुत से स्कूल भी हैं। इनकी फीस बहुत कम होती है। इन स्कूलों में एक स्कूल जिसका नाम 'बुरे लड़कों का स्कूल' है बहुत ही प्रसिद्ध है। इससे सब को चाहे उनकी उम्र कुछ भी हो बच्चों की तरह कपड़े पहनने पड़ते हैं यहां हसने का काफी अच्छा सामान उपस्थित रहता है।

कुछ ही पिछले वर्षों से जर्मनी में खेलों का प्रचार बहुत बढ़ गया है। करीब ६०० खेलने के मैदान बर्लिन में हैं। इसके अलावा ६०० मील लम्बा एक बहुत सुन्दर खेलने का जगह भी बनाया गया है। इसमें १०० मील लम्बा और २२ इञ्च चौड़ा एक तालाब है। इसमें टेनिस कोर्ट, हाकी कोर्ट इत्यादि भी है। इसके चारों ओर ४५०० जनता के बैठने लायक जगह बनी हुई है। जर्मन लोग हलके हलके खेलों में बहुत उस्ताद होते हैं। वर्ल्ड ओलाम्पिक्स में जर्मन लोग कई चीजों में सबसे आगे बढ़े हुए हैं।

जर्मन लोग कसरत और जिमनेजियम में भी बहुत बढ़े चढ़े हैं। एक तो स्कूल में उनको यह सब खूब सिखाया जाता है।

फिर बड़े होने पर हर जगह उन्हें जिमनेजियम घर मिल जाते हैं।

ये लोग बर्फ पर फिसलने में बहुत उस्ताद होते हैं। हर एक लड़का लड़की इस काम में निपुण होता है। यहां बर्फ भी अधिक पड़ती है। इसलिए फिसलने का बड़ा अच्छा मौका रहता है। इनके मां बाप इसके लिए बच्चों पर बिगड़ते नहीं।

टेनिस खेल हर जगह खेला जाता है। कुछ कलब ऐसे हैं जिसमें विश्व प्रसिद्ध मैचैस खेले जाते हैं। इनके मैदान बहुत अच्छे बने रहते हैं। फुटबाल और हाकी भी खूब खेले जाते हैं। दुनियां में कई बार हांकी में सब देशों से जीत चुके हैं। लेकिन हिन्दुस्तान की हांकी टीम से ये हार चुके हैं। क्रिकेट बिलकुल नहीं खेला जाता। यहां के लड़के लड़कियां तैरना बहुत अच्छा जानती हैं। इन्हें स्कूलों में इसकी शिक्षा भी मिलती है। इसके अलावा म्यूनिसपिल्टी की ओर से बहुत से तालाब बने हुए हैं। इनका पानी बहुत साफ रक्खा जाता है। यहीं लोगों को तैरना सिखाया जाता है। छोटे छोटे बच्चे जो ठीक तरह दौड़ भी नहीं सकते, मेढकों की तरह तैरते पाये जाते हैं। तैरने के लिए बहुत ही कम फीस देनी पड़ती है। तैरना सीखने के लिए भी फीस बहुत कम है।

यहां नाव पर रेस करने का खेल बहुत खेला जाता है। यह बहुत ही लोक प्रिय है। इसमें लड़के और लड़कियां दोनों भाग लेते हैं। लड़कियों को खास तौर से सिखाया जाता है। हर साल यहां बर्लिन युनीवर्सिटी के छात्रों और टेकनिकल

हाई स्कूल के विद्यार्थियों का नाव रेस होता है तो बड़ा मजा आता है। इसके अलावा बहुत से लड़के और लड़कियां अपना नाव रेस क्लब खोले हुए हैं।

झीलों में नहाने का रिवाज बढ़ता जा रहा है। गरमी के दिनों में हज़ारों टोलियां यहां आती हैं। और सूरज के प्रकाश में नहाने का आनन्द लेती हैं। बच्चे किनारे के समतल ढालू ज़मीन पर मजे से तैरते हैं। डूबने का खतरा नहीं रहता। ऐसे ही जगहों में पेरीवाद नाम की एक प्रसिद्ध झील है।

यहां एक साल ८०,००० आदमी स्नान के लिए आते हैं। परन्तु ध्यान रहे कि ये स्नान का आनन्द लेने के लिए आते हैं। भारतवर्ष की तरह धर्म के लिए नदी स्नान करने नहीं जाते। म्युनिसपैलिटी लोगों को भोजन आदि का बड़ा अच्छा इन्तज़ाम कर देती है।

घुड़ सवारी बर्लिन में उतनी लोकप्रिय नहीं है जितनी ऊपर लिखी हुई चीज़। लड़कियों को घुड़सवारी करना बहुत ही कम आता है। लड़के अच्छी तरह घुड़सवारी नहीं कर पाते। हर घर में घुड़सवारी होती है। बर्लिन में और जगहों की अपेक्षा घोड़े कम होते हैं।

कुछ सनातन प्रथाएँ

बर्लिन में और बड़े नगरों की तरह कुछ अनोखे रिवाज माने जाते हैं। कुछ तोबड़े ही विचित्र और मनोरञ्जक हैं। हफ्ते के कुछ दिनों में प्रायः शाम के समय कुछ बूचरों की दूकानों के सामने सफेद वस्त्रों से लिपटी कुर्सियां रक्खी रहती

हैं। इसे देखकर पथिक समझ जाते हैं कि यहां "ब्लैक पुडिङ्ग" मिलेगा। यह मनोरंजक चीज एक कसाई ने पहले-पहल निकाला। वह शाम को एक खास सफेद कपड़ा पहन कर खड़ा हो जाता है और पथिकों से एक बार आजमाइश करने के लिए कहता था। धीरे धीरे वह सारे शहर में प्रसिद्ध हो गया। उसके मृत्यु के पश्चात् यह ढङ्ग एक निशान बन गया। और अब तो इसका बहुत प्रचार है। भारतवर्ष में भी तुम लोगों ने बड़े शहरों में एक खास ढङ्ग के कपड़े पहने हुए दांत के मंजन आदि बेचते हुए देखा होगा। यह प्रचार का अच्छा ढङ्ग हो गया है। और आज का व्यवसाय प्रचार पर ही निर्भर है।

विटसनटाइड में मई के महीने में बचे पेड़ के कोमल शाखा और पत्तों से प्रत्येक चीज सजाई जाती है। इसे मीन कहते हैं। बचे ही सब से पहले मई में छत्तों से लदता है। इनके शाखों और पत्तों से लदी हुई गाड़ियां सुबह ही आ जाती हैं। एक पेनी में एक शाख मिल जाती है। दूकानों के सामने भी ये शाखे रक्खी रहती हैं। कोचवान लोग अपने घोड़ों को इससे सजाते हैं। चारों ओर हरियाली ही हरियाली दिखाई देती है।

कुछ बर्लिन की दूकानों पर विचित्र ढङ्ग से निशान बने रहते हैं। मक्खन की दूकानों के सामने एक मढ़ी हुई गेंदे खिची रहती है। कोयले की दूकानों के सामने दो आरेदार रक्खे हुए कुल्हाड़ी बने रहते हैं। इन निशानों को देखकर बर्लिन

निवासी फौरन जान लेता है कि उस दूकान में फलां चीज़ मिलेगी।

जैसे हमारे यहां वर्ष के कुछ दिनों में कुछ खास प्रकार की चीज खाई जाती है वैसी ही बातें यहाँ के निवासी भी करते हैं। नए साल के पहले दिन के शाम को प्रत्येक जर्मन निवासी एक किस्म की शहद रूखरीली और एक काप जो शराब में डुबोई रहती है खाते हैं। यह खाना उस दिन जर्मनी के प्रेसिडेन्ट से लेकर मामूली मजदूर तक के टेबुल पर दिखाई देता है। तुम शायद समझो यह खाने में अच्छा नहीं होता। पर ऐसी बात नहीं यह बहुत ज़ायकेदार होता है। फिर जो चीज एक बार चक्खी जाती है वह साधारणतया अच्छी भी लगती है। इसके अलावा गरम चाय और अखरोट तथा मोनमील नाम की मिठाई भी शाम के समय खाई जाती है। यह उनका उस दिन के लिए राष्ट्रीय भोजन है। इस प्रकार के रिवाजों से आपस में प्रेम बढ़ता है और सारा राष्ट्र एकता के संग में बँध जाता है।

बृहस्पति के दिन यदि तुम बर्लिन के पुराने होटलों या नमूनाघरों में जाओ तो तुम्हें एक तश्तरी जिसमें उबाला हुआ गोश्त महरकी पुकिङ्ग रक्खा रहता है। मिलेगा। जर्मनी लोग इसे बहुत पसन्द करते हैं।

जिस तरह भारतवर्ष में दूध का बड़ा महत्व है। उसी तरह जर्मनी में भी गरमी के दिनों में साधारण भोजन के साथ वे लोग भी दूध पीते हैं। पर उनका दूध दूसरे किस्म का होता है। हम लोगों को तो बगैर पानी मिला हुआ दूध ही

मिलना मुश्किल हो गया है। पर उनके यहां यह बात नहीं है। हमारे यहां दूध उबालकर पीते हैं। उनके यहां जैसे ही दूध दुहा जाता है वैसे ही एक शीशे के बर्तन में उड़ेल दिया जाता है। ठन्ड की वजह से दूध धीरे धीरे जम जाता है और उस पर एक मलाई की परत जम जाती है। फिर लोग बड़े चाव से इस दूध को चीनी के साथ खाते हैं। यह बहुत ही स्वादिष्ट होता है।

विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों में यह एक प्रथा है। विद्यार्थी कोई खास त्योहार मनाने के लिए एक बहुत कमरे में एकट्ठे होते हैं। कमरे में मेज़ और कुर्सियां रक्खी रहती हैं। मेज़ पर बियर शराब रक्खी रहती है। छात्र भाषण देते हैं और कुछ नकल भी करते हैं इस तरह आमोद-प्रमोद करते जाते हैं और शराब भी पीते जाते हैं। योरुप ठन्डा देश है। वहां शराब पीना पाप नहीं समझा जाता। यदि शराब न पीए तो उन्हें ठन्ड बहुत सताएगा। गान्धी जी जब विलायत पढ़ने के लिए गए तो इन्होंने वहां शराब छुआ भी नहीं। बापू अपने प्रतिज्ञा में अटल रहे। योरुप में भी कुछ ऐसे लोग हैं जो शराब पीना बुरा समझते हैं। अंग्रेज़ी के इस समय के सब से बड़े साहित्यिक जार्ज बर्नार्ड शाह भी शराब बिलकुल नहीं पीते। वे तो गोश्त भी नहीं खाते हैं। पर ऐसे लोग विरले ही मिलते हैं। नहीं साधारणतया शराब और गोश्त ही उनका मुख्य भोजन है।

बर्लिन की दूकानें

यदि हम फैशन के लिहाज से देखें तो दुनियां का सब से

बर्लिन-दर्शन

बड़ा नगर पैरिस है। फैशन यहीं देखने को मिलता है। इसके बाद लन्दन का नम्बर आता है। बर्लिन फैशनेबुल शहर नहीं है। परन्तु यदि सामान के लिहाज़ से देखे तो दुनिया में इसका कोई मुकाबला नहीं कर सकता। यहां छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी हर किस्म की चीज़ मिल जाती है। ये सामान दूकानों पर बड़े ही मनोहर ढङ्ग से सजाये रहते हैं। देखकर मुंह में पानी भर आता है। कई दूकानें तो बहुत ही बड़ी हैं। इसमें पांच पांच हज़ार आदमी काम करते हैं।

बर्लिन में फूल बेचने वालों की दूकानें बहुत सी हैं। ये बहुत ही अच्छे ढङ्ग से सजाई रहती हैं। जर्मनी में फूल का बड़ा रिवाज है। वे जब कभी किसी दोस्त से मिलने जायंगे या उन्हें स्टेशन पर लेने जायँगे तो फूल अवश्य ले जायँगे। और जब पहुंचाने जाने लगते हैं तब भी फूल ले जाते हैं। जन्म दिन के दिन भी फूल लेकर जाना आवश्यक है। कुछ ही जर्मनों के पास बाग़ है। अतएव फूल सबको खरीदना पड़ता है। इसीलिए फूल की दूकानें बहुत दिखाई देती हैं। और कोई चीज़ इसीलिए बिकती है क्योंकि जनता को उस चीज़ की ज़रूरत है। मान न मान मैं तेरा मेहमान वाला मसला यहां काम में नहीं आता।

गर्मी के दिनों में जब जर्मन लोग घूमने के बाद अपने घरों को लौटते हैं तो उनकी नौकरानियां फूल खरीद कर घर के सब से सुन्दर गमले में रखकर खाने वाले मेज़ पर सजाती हैं। इससे मालिक बहुत खुश होते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि अपने परिश्रम से कमाये पैसे इसने खर्च किए हैं।

देश दर्शन

जर्मन लोग अपने मृतक रिश्तेदारों को कब्र में गाड़ कर ही नहीं छोड़ देते। हर कब्र के चारों ओर एक छोटा सा बाग बना होता है। बाग में रंग विरंगे फूल खिले रहते हैं। और एक कोने में कुछ लताएँ बनी होती हैं। इनके नीचे अफ़सोस करने वाले बैठकर चिंतन करते हैं। हर रविवार को घर वाले आकर कब्र पर फूल चढ़ाते हैं। बच्चे भी फूल चढ़ाते हैं। परन्तु कोई छाती पीटता हुआ या रोता हुआ नहीं दिखाई देता। लोग ये सब कार्य खुशी खुशी करते हैं।

साल में एक दिन सब लोग फूलों से लदे हुए विशेष तौर पर मकबरों पर आते हैं और बड़े बड़े सुन्दर फूल चढ़ाते हैं। गरीब से गरीब आदमी भी यह करता है। यह करना लोग फर्ज़ समझते हैं।

सिगार की दूकानें बर्लिन में बहुत हैं। बर्लिन के लोग सिगार और सिगरेट बहुत पीते हैं। ये दूकाने साधारणतः नोक्कड़ों पर होती हैं जिससे साफ साफ दूर से दिखाई दें। यहां सिगरेट आदि बहुत ही सस्ते बिकते हैं। तम्बाकू जर्मनी में ही पैदा होती है। अतएव सिगरेट बड़े पैमाने से बनाये जाते हैं।

जर्मनी के केक बहुत स्वादिष्ट होते हैं। एतवार के दिन सब घर वाले एकट्ठे होकर काफी पीते हैं। यह चाय के बजाय काफी अधिक पी जाती है। उस दिन मां और बाप दोनों रहते हैं। लड़कियां उस दिन अपने सब से सुन्दर फ्राक में रहती हैं और लड़के सन्डेस्कूल में। उस दिन सब बहुत ही अच्छे ढङ्ग से व्यवहार करते हैं।

मेज़ के बीच में तरह तरह के क्रेक रक्खे रहते हैं जिसको जो पसन्द आता है वह वही खाता है। बड़े लोग काफी के साथ मक्खन बहुत खाते हैं। और सचमुच यह बहुत ज़ायकेदार होता है।

बर्लिन के दूकानों की खिड़कियां बहुत ही अच्छे ढङ्ग से सजाई रहती हैं। इस काम के लिए स्त्रियाँ नियुक्त की जाती हैं। परन्तु जो दूकान जितनी ही सजी रहती हैं वहां अच्छी चीज़ें उतनी ही कम मिलती हैं। और यह बात तो सब जगह लागू होती है। हमारे यहां भी प्रायः यही बात पाई जाती है। कहावत भी प्रसिद्ध है ऊँची दूकान का फीकी पकवान।

बर्लिन के बाग

बर्लिन में बहुत से सुन्दर सुन्दर पार्क हैं। इसमें सबसे प्यारा टाइगरटन बाग़ है। इसमें एक झील है। इस पर हज़ारों नौकायें तैरती हुई दिखाई देती हैं। झील के बीच में सुन्दर सुन्दर टापू हैं जो बड़े भले लगते हैं पर उनमें घूमने की सख्त मुमानियत है। बच्चे भी किनारे पर सुरक्षित ढङ्ग से तैर सकते हैं और तैरते भी हैं। हर जगह घनी हरियाली ही दिखाई देती है। इस हरियाली में हर जंगलों में फूल खिले रहते हैं। इसे देखकर ऐसा मालूम होता है कि आकाश में तारे खिले हुए हैं और सचमुच मनुष्य जितने क्षण इस बाग में घूमता है वह समझता है कि वह स्वर्ग में ही है। लड़कों के लिए बालू के पहाड़ इकट्ठे कर दिये गए हैं। बच्चे इनमें खेला करते हैं। और जो बच्चे खेलना नहीं चाहते वे किसी सूने कुञ्ज में घुस जाते हैं और ध्यानपूर्वक पढ़ते हैं। ताज़ा दूध हर समय बिकता रहता है।

देश दर्शन

बाग़ में गाने वाली चिड़ियाँ चहचहाती हुई इस डाल से उस डाल, इस फूल से उस फूल पर फुदका करती हैं। सब लोग इन्हें बहुत पसन्द करते हैं। शैतान लड़के हर जगह होते हैं। कुछ ऐसे शैतान लड़के चिड़ियों के घोसलों को ही खोजा करते हैं तथा फँसाया करते हैं।

१० मार्च का दिन बड़ा ही महत्वपूर्ण दिन है। यहां प्रशा की रानी लाउज़ पैदा हुई थी। सारे जर्मनी वाले इन्हें बहुत प्यार करते थे। अब भी इस दिन सारी जनता इनकी याद में खुशियां मनाती हैं। जब नैपोलियन ने प्रशा को जीत लिया तो इन्हें बहुत कष्ट उठाना पड़ा था। इन्होंने अपने देश की रक्षा के लिये अपने सारे गहने बेच डाले। गहने के बजाय ये फूलों का शृंगार करती थीं। एक बार एक झोपड़े में इन्हें जाड़े की रात बितानी पड़ी। यहीं उन्हें जो सर्दी लगी कि फिर वह वहां से नहीं गयीं।

इनके मनमें केवल एक ही बात थी कि कैसे जनता की रक्षा करूं। आखिरकार कोई रास्ता न देखा तो नैपोलियन से ही मिलने गईं और उससे मिलकर बातचीत की। नैपोलियन इनके व्यक्तित्व से बहुत ही प्रभावित हुआ और एक फूल इन्हें भेंट की। औरतों के सामने नैपोलियन कुछ ही बार पिघला था। एक यहां, दूसरा पोलैण्ड में और तीसरा फ्रांस में।

१० मार्च को राजकीय बाग़ से फूल आते हैं और महारानी लाउज़ की संगमरमर की मूर्ति पर जो इस बाग़ में है चढ़ाए जाते हैं। बड़ा ही अच्छा नज़्ज़ारा होता है। स्कूल के लड़के भी अपने मास्टरों के साथ देखने आते हैं। तरह तरह के फूलों की सजी हुई प्रतियां जगमगाती रहती हैं।

बर्लिन-दर्शन

इस बाग़ में एक बड़ी अच्छी जगह है। जिसे रोसेरियम कहते हैं। यहाँ दुनिया के सब किस्म के गुलाब के फूल पाए जाते हैं। इन फूलों के बीच एक छोटा सा सरोवर है। वहाँ विद्यार्थी अपने पुस्तकों के साथ आते हैं और अध्ययन करते हैं। बच्चे अकेले यहाँ नहीं आ सकते। फूलों की भीनी भीनी महक दिमाग़ को ताज़ा कर देती है।

इस बाग़ का सबसे बड़ा कुञ्ज विजय कुञ्ज के नाम से मशहूर है। इसके सिरे पर एक बहुत बड़ा इमारत है जिसके चारों ओर ६ तोपें रक्खी हुई हैं। ये तोपें भिन्न भिन्न देशों की हैं।

इस कुञ्ज के दोनों तरफ थोड़ी थोड़ी दूर पर जर्मनी के बादशाहों की प्रतिमाएँ बनी हुई हैं। यह दृश्य बहुत ही सुहावना लगता है। हरी हरी क्यारियों और शाखों के बीच सफेद मूर्तियां मानो आसमान में बादल। सी प्रतीत होती हैं।

बाग़ के बीच में 'बेलोब' का प्रसिद्ध महल है। इसके चारों ओर बहुत ही सुन्दर बाग़ है। गरमी के दिनों में जब बाग़ फूलों से लदा रहता है तो हज़ारों आदमी नित्य देखने आते हैं।

चारलोटेनवर्ग बाग़ में बर्लिन का मशहूर यादगार बना हुआ है। यहाँ अमर शिल्पी कांच के बनाए हुये बादशाह फ्रेडारिका प्रथम और उनकी रानी की प्रतिमाएँ रक्खी हुई हैं। वे सोते हुये दिखाये गये हैं। ये इतने सजीव बने हुए हैं कि यात्री अपने आप धीरे-धीरे चलने लगते हैं जिससे बादशाह और मलका की नींद न उचट जाय। ऐसी ही प्रतिमाएँ विलियम और राजकुमारी आरिता की भी बनी हुई हैं।

ट्रेपरिड बाग़ खास तौर से बच्चों के लिये बनाया गया है।

यहां हर तरह के खेल खेले जा सकते हैं। बीच बीच में सुंदर कुञ्ज बने हुए हैं। जिनमें बैठने की जगह भी होती है।

बर्लिन के छोटे छोटे बाग़ शहर के चारों ओर बहुत हैं। इनके लिये म्युनिसिपैलिटी पानी और तरह तरह के औजार काम में लाने के लिये देती है। इनके मालिक इन बाग़ों में प्रायः एक छोटा सा बंगला बनाए रहते हैं। इसमें वे गर्मी के दिनों में आकर कभी कभी ठहरते हैं और फिर शहर को लौट जाते हैं। भारतवर्ष में भी शहर के बाहर रईसों के बाग़ देखने को मिलते हैं। परन्तु इसमें उनके और उनके दोस्तों के सिवा दूसरा कोई भी झांक नहीं सकता। परन्तु यहाँ गरीब मज़दूरों को ये लोग ठहरने देते हैं।

जिस तरह गर्मी के दिनों में यहाँ लोग शिमला मंसूरी घूमने जाते हैं उसी तरह बर्लिन निवासी ग्रूनेवाल्ड नामक जगह पर जाते हैं। यहां पल्न और बर्च पेड़ों का तीस मील सरीखा जङ्गल है। तुम यहां दो पेनी देकर पहुँच सकते हो। इस कारण यहां गरीब से गरीब लोग भी आसानी से पहुँच सकते हैं। हमारे यहां शिमला जाने के लिए केवल किराये के लिये पचासों रुपए चाहिये। वहां बहुत सी गलियां बनी हुई हैं। इसमें लोग टहलते हैं। बीच में एक इमारत बनी हुई है जिसमें सब लोग आराम कर सकते हैं। यहाँ एक पेनी दे दीजिये और आपको एक गिलास स्वादिष्ट मक्खन का दूध मिल जायगा। दूध पीते रहिये और मजे से घूमते रहिये। शिमले और मंसूरी में खाने पीने की चीजें इतनी महँगी बिकती हैं कि केवल अमीर लोग ही खरीद सकते हैं। लेकिन ग्रूनेवाल्ड में यह बात नहीं है।

बर्लिन-दर्शन

इसके अतिरिक्त यहाँ सस्ते खाने के लिये स्पेशल होटल बने हुए हैं। जिसमें सब तरह के भोज्य पदार्थ मिल जाते हैं। अमीर और गरीब सब आराम से खाते पीते रहते हैं। यह है वास्तविक जीवन।

पहले यहाँ बहुत से हिरन थे। वे इतने पालतू थे कि आपके हाथों में ही खाना शुरू कर देंगे। लेकिन अब ये यहाँ से हटाकर दूसरे पार्कों में भेज दिये गये हैं।

बर्लिन में ज़ू बहुत हैं। यें ज़ू सुन्दर सुन्दर बाग़ों से घिरे रहते हैं। महीने के पहले रविवार के दिन भीतर जाने के लिये केवल तीन पेन्सल ही देना पड़ता है। उस दिन तो जानवरों के बजाय आदमी ही अधिक दिखाई देते हैं। इनमें भोजनालय और सस्ता घर भी होते हैं। जाड़े की शाम लोग यहीं बिताना पसन्द करते हैं।

इनमें दुनिया के प्राय: सभी जानवर मिल जाते हैं। इनके रहने के कमरे बहुत ही कलापूर्ण और सुन्दर बने रहते हैं। इन कमरों के चारों ओर खुली जगह भी होती है। ये जानवर और चिड़ियां बहुत खुश दिखाई देती हैं। कुछ तो लड़के लड़कियां भी खुश होती हैं और जगह कैद होने पर ये पत्नी जोड़ा नहीं खाते पर यहां ये भी करते हैं।

इन बाग़ों से सटे हुए ही पानी के जानवरों के लिये जगह बनी हुई हैं। इसमें तरह तरह की रंगीन मछलियां इधर से उधर फुदकती दिखाई देती हैं। यहां बहुत भीड़ होती है। इमारत के दूसरे मंजिल में रेंगने वाले जानवर मिलते हैं। ये अपने शीशे के घरों में बैठे हुए आत्मचिंतन किया करते हैं।

काम ही क्या है ? शिकार खोजना नहीं है खाना मिल ही जाता है। तो फिर बैठे बैठे सिवा मक्खी मारने के और काम ही क्या है।

इसके पास ही पैल्टीटियम है। यहां सम्पूर्ण विश्व और बड़े बड़े सितारे तथा अन्य दुनियां बनी हुई है। जिस तरह वास्तविक जगत में ये एक दूसरे को खींचते हुए घूमते रहते हैं वैसे ही यहां दिखाया जाता है। साल भर की सारी हरकत (इन सितारों की) यहां पांच मिनट में दिखा दिया जाता है। खरगोल विद्या सीखने के लिये यह बहुत अच्छी है।

बोटेनिक बाग़ भी १६० एकड़ ज़मीन में फैला हुआ है। यहां सभी तरह के पेड़ पौधे दिखलाये जाते हैं।

इसके पास ही टेमपेलदार का हवाई मैदान या एयरोड्रोम है यहां हवाई जहाज़ों की बड़ी चहल पहल रहती है। यहीं से ज़ेपलिन उड़ा था। यहां ऐतिहासिक एयरोड्रोम बहुत ही लम्बा चौड़ा है।

जर्मनी के लोग बड़े दृढ़प्रतिज्ञा के होते हैं। जिस काम में लग जाएंगे उस काम को पूरा करके ही छोड़ेंगे। हवाई जहाज़ पर चढ़ना यहां सभी जानते हैं। जिस तरह भारतवर्ष में जब कभी एरोप्लेन ऊपर से उड़ता चला जाता है तो लोग घरों से बाहर आकर देखने लगते हैं उसी तरह बर्लिन निवासी भी खिड़कियों के पास बैठ कर आने जाने वाले हवाई जहाजों को देखा करते हैं। वे इससे कभी नहीं ऊबते।

बसन्त ऋतु में बर्लिन

बसन्त ऋतु के आगे ही बर्लिन के नाश्ता घर कमरों से

निकल कर बाग़ में आ जाते हैं। ये बाग़ बहुत सुंदर होते हैं। अमीर नाश्ता घर के बाग़ की फर्श लकड़ी से जड़े रहते हैं। चारों ओर मालिक की हैसियत के अनुकूल सजावट रहता है। लताओं और फूलों से नाश्ताघर गमकता रहता है। चारों ओर चहल पहल रहती है। लोग खुशी खुशी आते हैं और खा पी कर चले जाते हैं। जो आनन्द भारतवर्ष में अमीरों के यहाँ शाम को शहर से बाहर बाग़ में चाय पानी करने से मिलता है वही मजा यहाँ नाश्ताघरों में ही मिल जाता है।

इसके अतिरिक्त टाइगरटन के बाग़ में भी आनन्द छाया रहता है। लाइम, हाथार्न आदि पेड़ फूलते रहते हैं। चिड़ियां इस डाली से उस डाली पर फुदकती हुई अतीन्द्रिय गाने सुनाती रहती हैं। जर्मनी में मई के महीने को खुशी का महीना कहते हैं।

मई का महीना भाग्यशाली भी समझा जाता है। हर जगह इस समय शादी की गाड़ियां दिखाई देती हैं।

नौशा एक गुलदस्ते के साथ नौशी के घर जाता है। वहां उसे लेकर गिरजा घर के लिये रवाना होता है। नौशी सफेद कपड़े पहने हुये और माहिल का गुलदस्ता लिये हुये शादी करती है। मुँह पर पतला लम्बा सा घूँघट रहता है। परन्तु इस घूँघट से मुँह दिखाई देता रहता है। भारतवर्ष में तो ऐसी घूंघट पहनती हैं कि दूसरों को क्या खुद पहनने वाले को ही कुछ दिखाई नहीं देता। यह भद्दी चीज है।

यदि शादी पुराने ढंग पर होगी तो ब्याह में काफी रुपये खर्च हो जाते हैं।

ब्याह के पश्चात् एक होटल में बैठ कर लोग तरह तरह की रंगरेलियां करते हैं। होटल के दो तीन कमरे इसके लिए रिजर्व करा लिये जाते हैं।

करीब छः बजे कार्य प्रारम्भ होता है। स्पीच आदि के बाद लोग गिलास मिलाते हैं और पीते हैं भाषण बहुत ही हँसाने वाले होते हैं। कुछ लोग कविता भी पढ़ते हैं। इसमें पति पत्नी के जीवन के चुने हुये हास्याम्पद अंश रहते हैं। यदि घर में से कोई कविता न लिख सका तो कुछ पेशेवर कवि भी होते हैं जो लिख दिया करते हैं। बीच बीच में गाने, प्रहसन इत्यादि होते रहते हैं। रात भर यही चहल पहल रहती है। जब सुबह करीब आता है तो लोग अपने अपने घरों में जाकर आराम करते हैं। मेहमान लोग दिन को भी रहते हैं। शाम को बाल नाच होते हैं। सब लोग इसमें शामिल होते हैं।

इस्टर के दिनों में बड़ा ही आनन्द आता है। उस दिन अण्डों की ही बहार रहती है। तरह तरह के अण्डे दिखाई देते हैं। यदि भारतवासी जो इन सब से घृणा करता हो वहाँ पहुँच जाय तो उसे सर पर पांव रखकर भाग आना पड़ेगा। अक्सर अण्डे के शक्ल की बनी हुई अन्य चीजें भी बिकती हैं।

इस्टर इतवार के दिन एक 'अण्डे की खोज' नामक खेल खेला जाता है। यदि कहीं बाग हुआ तो फिर क्या है सोने में सुगन्ध है। यदि नहीं तो घर में ही खेल खेला जा सकता है। मां बाप रंग बिरंगे उबाले हुये अण्डे जगह जगह छिपा देते हैं। सब लड़के लड़कियां एक एक डोलची लेकर अण्डे खोजने निकलते हैं। अण्डे की खोज में ऐसा होता है कि कुछ तो काफी

अण्डे पा जाते हैं और कुछ कम पाते हैं। उनका मुँह अपने आप लटक जाता है। बाद को माँ बाप ऐसे लड़कों को कोई खास जगह बता देते हैं जहाँ बहुत से अण्डे छिपाये रक्खे रहते हैं। बस उनका भी कोटा पूरा हो जाता है।

क्रिसमस और नया साल

क्रिसमस साल भर का त्योहार है। जर्मनी में वास्तविक क्रिसमस के एक दिन पहले बड़ी चहल पहल रहती है। और देशों में क्रिसमस के दिन ही खुशियां मनाई जाती हैं उस दिन एक आह्लाद भरा वातावरण सर्वत्र छाया रहता है। तरह तरह के पार्सल यहाँ से वहाँ, वहाँ से यहाँ आते जाते दिखाई पड़ते हैं। हर घर में एक कमरा जिसमें क्रिसमस मैन रक्खा रहता है एक सप्ताह पहले से ही बन्द कर दिया जाता है। लड़के उस कमरे के बारे में तरह तरह की कल्पना किया करते हैं।

जवान लड़के लड़कियां अपना अलग उत्सव मनाते हैं। लड़कियां कई हफ़्ते पहले ही अपने दोस्तों से मिलकर सब बातें तय कर लेती हैं। हर घर में ये लोग आपस में मिलते हैं और एक साथ खाना खाते हैं। बच्चे यहां नहीं आ सकते। बच्चे दूसरी जगह अपने कार्यों में व्यस्त रहते हैं।

स्कूलों में बच्चों को क्रिसमस के दिन गाने के लिये एक एक गाने याद करा दिये जाते हैं। बच्चे त्योहार के दिन ही उसे अपने मां बाप को सुनाते हैं, इससे पहले नहीं।

क्रिसमस सप्ताह में बर्लिन की सड़कों पर रेल-पेल मची

रहती है। लोग पारसलों से लदे हुये आते जाते रहते हैं। दूकानें खूब सजी रहती हैं। हर दूकान की खिड़की के पास पुतलियों द्वारा कोई न कोई परियों की कहानी का पार्ट कराया जाता है। बच्चों को यह बहुत आकर्षक लगता है।

क्रिसमस आने के दस दिन पहले ही होली पेट्री बांध बांध कर गाड़ियों पर लादे हुए शहर में आते दिखाई देते हैं। इसे देखकर लोग खुश हो जाते हैं कि क्रिसमस करीब आ गया है। शहर के हर कोने और चौराहों पर ये होली पेट्री सजा दिये जाते हैं। इनमें से कई तो काफी बड़े भी होते हैं। हर घर में एक होली पेड़ जरूर रहता है। यदि पेड़ नहीं रहेगा तो इसके माने यह है कि उस घर में त्योहार नहीं मनाया जायगा।

यदि क्रिसमस सप्ताह में बर्फ खूब पड़ी रहेगी तो लोग स्लेजों पर बैठकर सैर सपाटे के लिये निकलते हैं। घोड़े बहुत तेज़ भागते हैं क्योंकि गाड़ी से स्लेज बहुत ही हल्का होता है गाड़ीवान लगाम को दोनों हाथों में पकड़े रहते हैं। परन्तु इस समय सब लोग खूब कपड़े पहने रहते हैं।

त्योहार प्रायः सभी जगह एक ही तरह से मनाया जाता है। शाम को सब लोग उस बन्द कमरे के सामने खड़े हो जाते हैं। संगीत छेड़ दी जाती है। कुछ देर तक संगीत होती रहती है फिर घंटियां बजने लगती हैं। लोग खामोश हो जाते हैं। कमरे का दरवाजा खुलता है। लोग कमरे के अन्दर दाखिल हो जाते हैं। वहां पेड़ भली भांति सजाया रहता है। पेड़ के चारों ओर हर घर के व्यक्ति के लिए अलग अलग मेज़ लगे रहते हैं मेज पर भेंट रक्खी रहती है। प्रायः जिसको जो चीज पसन्द

थी या वह सालभर मांग रहा था वही चीज़ उसे वहां मिलती हैं। एक तश्तरी में लाल सेव, तरह तरह के फल, शहद के केक तथा और भी कई चीजें रक्खी रहती हैं। नौकर अपना भेंट अलग रखते हैं। उनके भेंट में अक्सर रुपया भी रहता है।

क्रिसमस सप्ताह में थियेटर घर भरे रहते हैं। बच्चों के लिये खास खेल खेला जाता है। परन्तु इसको बड़े लोग भी देखते हैं।

३१ दिसम्बर के दिन रात को जर्मनी लोग एक खास त्योहार मनाते हैं। लोग दूकानों से जस्ता खरीद कर लाते हैं। ये बहुत खूबसूरती के साथ डिब्बे में बन्द मिल जाते हैं। रात के समय सब लोग अपना अपना जिस्ता एक लोहे के चिम्मच में रख कर गलाते हैं। और जैसे ही वह गल जाता है उसे ठंडे पानी में छोड़ देते हैं। छोड़ते ही वह जम जाता है। जमने पर उसकी जैसी शकल होगी आने वाले साल को लोग वैसा ही समझते हैं। यानी अच्छा होगा या बुरा यह इसी से पता लगाते हैं। फिर रात को बारह बजे क्रिसमस पेड़ फिर मोमबत्तियों से जलाया जाता है। घड़ियां मिला ली जाती हैं। पन्च और अखरोट पेड़ पर तैयार रक्खे रहते हैं। बारह बजते ही लोग "प्रोसिट न्यूजार" कह कर एक दूसरे से गले मिलते हैं।

कुछ लोग नाश्ता घरों में यह त्योहार मनाना पसन्द करते हैं मेज़ सजाने के लिए पहले से ही हुक्म दे दिया जाता है। लोग मेज़ पर बैठ कर बाजा सुनते हैं और खुशी मनाते हैं। उस रात को सब लोग एक दूसरे को अभिवादन "प्रोसिट न्यूजार"

कह कर ही मिलते हैं। चारों ओर इसी की ही आवाज़ सुनाई देती है।

कभी कभी भीड़ बहुत भयानक हो जाती है। लोगों को शैतानी सूझने लगती है। उस समय यदि कहीं लम्बी हैट पहने हुए कोई आदमी मिल गया तो उसकी दुर्गति हो जाती है। अतएव उस समय कोई लम्बी हैट पहनता ही नहीं। हां देहात से आए हुए चचेरे भाई आदि जिन्हें मालूम नहीं रहता पहने रहते हैं। उनकी नसें ढीली हो जाती हैं। परन्तु यदि शरारत अधिक बढ़ जाती है तो पुलिस रोक देती है पुलिस तैयार रहती है।

न्यू इयर्सडे—पहली जनवरी को लोग बहुत से फुटकर पैसे अपने जेब में रखते हैं। इस दिन सभी लोग धन्यवाद देते हैं और पैसे मांगते हैं। डाकिए को जो प्रायः कमज़ोर मनुष्य होता है उसे अवश्य पैसे दिए जाते हैं। अखबार लाने वाले तथा चिमनी साफ करनेवाले आदि सभी को कुछ न कुछ देना पड़ता है।

त्यौहार समाप्त हो जाने पर होली पेड़ भी समाप्त कर दिये जाते हैं। उन्हें चीड़ फाड़ कर जलने के लिए रसोई घर में भेज दिया जाता है।

वानसी से पोट्सडैम तक का जल मार्ग

बर्लिन के चारों ओर जंगल और झील हैं। ये बर्लिन की सुन्दरता में चार चांदें लगा देते हैं। इनमें सब से सुन्दर पोट्स-डैम (हैवेल के पास) है। रेल से हम यहां तीस मिनट में

पहुँच सकते हैं। एक दिन में यहां साठ रेलें जाती हैं। कुछ लोग स्टीमर से भी जाते हैं।

हैवेल नदी कई झीलों में से होकर बहती है। झील के चारों ओर बन है बहुत ही सुहावनी समा रहती है। इनमें सब से प्रसिद्ध झील वेनेसी है। यहां गर्मी के दिनों में हज़ारों स्टीमर बोट तथा हलकी नावें पानी के ऊपर तैरती हुई दिखाई देती हैं।

कुछ झीलों के चारों ओर रीड के बन हैं। यहां लोग पहुँच कर नाव को बांध देते हैं इन्हीं रीडों के बीच मेज़ और कुर्सी लगा देते हैं। मेज़ पर चाय, केक आदि तैयार करती हैं और खूब आनन्द पूर्वक एकान्त में बैठकर खाते हैं। यदि आप एक जगह बैठे हुए हैं तो रीडों से घिरे रहने के कारण आप दूसरे जगहों से नहीं देखे जा सकते हैं। चाय वगैरह पीने के बाद आप शोफो पर सो भी सकते हैं या किताब पढ़ सकते हैं अक्सर इनके किनारों पर लोगों ने बँगले बना रक्खे हैं। ये सुन्दर सुन्दर बागों से घिरे बड़े सुहावने प्रतीत होते हैं।

वेनेसी से कुछ ही दूरी पर पिकाक नाम का एतिहासिक टापू है। यह फ्रेडरिक विल्हेय का प्रिय स्थान है। यहां एक प्रसिद्ध विज्ञानिक भी रहता था जिसने फासफोरस का पता लगाया था।

हवैल के एक सब से चौड़े स्थान पर बादशाह विलियम प्रथम का बनवाया हुआ वैवेल्सवर्ग का महल है। इसमें फ्रेडरिक का भी काभी जीवन बीता था। इसका पार्क बहुत सुन्दर है।

इसके पास ही वरडर का जिला है। यहां के फल उत्तरी जर्मनी में बहुत प्रसिद्ध हैं। बसन्त ऋतु में बर्लिन निवासी यहां घूमने के लिए जाते हैं।

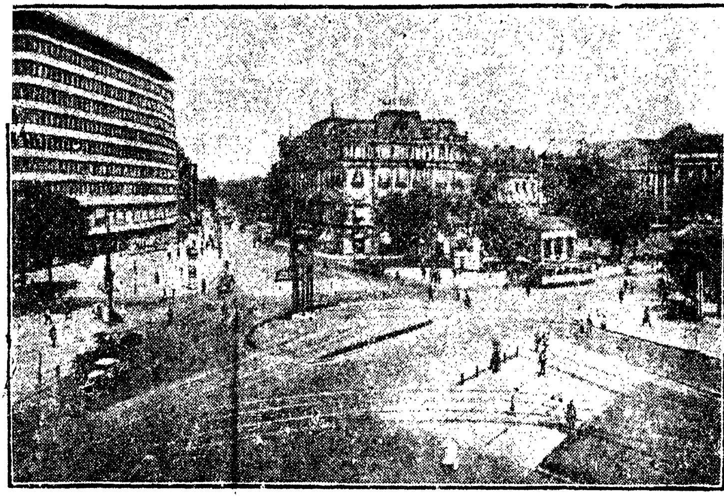
पोटसडेम

यह शहर केवल अपने एतिहासिक महत्व, सुन्दर स्थिति और राजमहलों के कारण प्रसिद्ध है। जो यात्री बर्लिन देखने जाता है वह यहां भी जाता है। यहां महान फ्रेडरिक के महलों तथा कब्र का दर्शन करने के लिए लोग एकत्रित होते हैं।

इसमें सुन्दर सुन्दर बाग़ भी कई हैं। कुछ लोगों का तो कहना है कि इससे सुंदर बाग़ और कहीं नहीं है। एक बाग़ का नाम है सिसिलियन बाग़। यहीं सभी देशों के पौधे देखने को मिलते हैं। यहां प्रकृति और कला का पूर्ण साम्राज्य दिखाई देता है। फिर एक पैराडाइज़ बाग भी है। यह उत्तरी इटली के बाग़ों की नक़ल करता है। यहां एक जापानी चाय घर है। इसके छत के ऊपर बहुत से बन्दर रहते हैं। बच्चों के लिए यहाँ अच्छी अच्छी चीज़ें मिलती हैं।

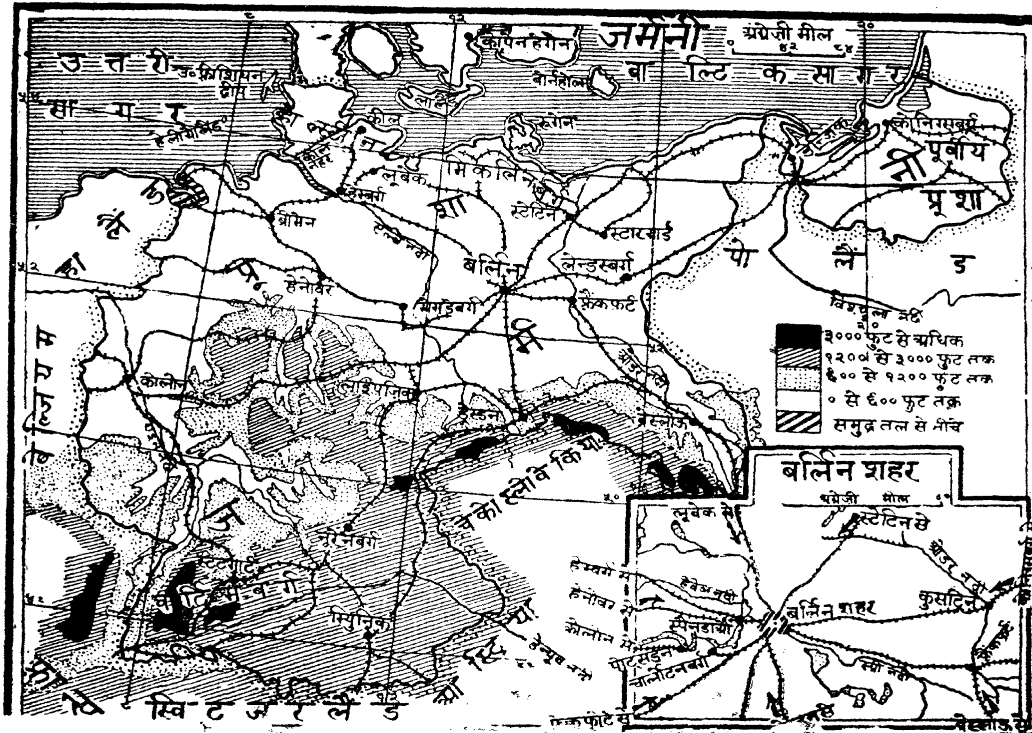
सेनसाउसी महल—महान फ्रेडरिक के महल का नाम है। जब फ्रांस का क्रांतकारी वाल्टेयर भाग कर बादशाह के यहां आया तो उन्होंने उसकी यहीं आवभगत की थी। दोनों में बड़ी प्रगाढ़ मैत्री थी। एक दिन बादशाह ने वाल्टेयर को चिढ़ाने के लिए एक कागज़ पर यह लिखा कि "वाल्टेयर गधा है"। उसके खाने के टेबुल पर लिखवा दिया। वाल्टेयर ने उसे देखकर कहा कि इस पर बादशाह का हस्ताक्षर नहीं है। क्या मैं

उनके जगह हस्ताक्षर कर सकता हूँ। बादशाह ने स्वीकार कर ली। फिर कागज बादशाह के सामने बढ़ा दिया। बादशाह ने पढ़ा "वाल्टेयर एक गधा है—फ्रेडरिक महान्।



बर्लिन शहर का एक दृश्य।

अब इस राजमहल में कोई नहीं रहता। यह खाली ही पड़ा रहता है। सप्तवर्षीय-युद्ध के पश्चात फ्रेडरिक ने पास ही एक नया महल बनवाया। यह महल दर्शनीय है। बादशाह की मृत्यु यहीं हुई थी। इसके बनवाने में ४५०,००० पौन्ड खर्च हुआ था। इसके सब से सुंदर कमरे का नाम है शेल्स का हाल। इसकी चार दीवारी, फर्श आदि बेश कीमती मूंगों, पत्थर आदि से सजे हुए हैं। इससे कई फर्लाङ्ग की दूरी पर एक प्रसिद्ध गिर्जाघर है। इसका नाम फ्रीडेन्स कर्चे है। इसके अतिरिक्त अन्य बहुत सी चीजें पोट्सडैम में दर्शनीय हैं। इस समय यहाँ एक एक हाथ भूमि के लिये घमासान युद्ध हो रहा है।



जर्मनी
अंग्रेजी मील
उत्तरी सागर
बाल्टिक सागर
कोपनहेगन
बोर्नहोल्म
कील
लूबेक
मिकलिनबर्ग
स्टेटिन
स्टारगार्ड
कोनिग्सबर्ग
पूर्वीय प्रूशा
ब्रेमिन
हेनोवर
बर्लिन
लेन्ड्सबर्ग
पोलैंड
मेगडेबर्ग
फ्रेंकफर्ट
कोलोन
लाइपज़िक
ड्रेस्डन
ब्रेस्लाऊ
बोहेमिया
न्यूरेनबर्ग
स्टटगार्ट
म्युनिक
डेन्यूब नदी
स्विटज़रलैंड
हालैंड
बेल्जियम
३००० फुट से अधिक
१२०० से ३००० फुट तक
६०० से १२०० फुट तक
० से ६०० फुट तक
समुद्र तल से नीचे
बर्लिन शहर
अंग्रेजी मील
लूबेक से
स्टेटिन से
हेम्बर्ग से
हेनोवर से
कोलोन से
पोटसडम
फ्रेंकफोर्ट से
ब्रेस्लाऊ से
कुसट्रिन